अलख

विषय सूची

1. सम्पादकीय 01
2. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरू देव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज 02
3. श्री गुरूदेव—भवहारी 07
4. सदगुरू के बलिहार 08
5. ਦੋਹਾਵਲੀ 09
6. ਸ਼੍ਰੀ ਸਦਗੁਰੂ ਚਰਨ ਕਮਲੇ ਭਯੋ ਨਮ 10
7. *Dhammapada* 12
8. नाभिकेन्द्र और हमारा स्वास्थ 14
9. सत्संग सूचनाएं 16

❐❐❐❐

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर (होशियारपुर)
पिन-146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com

यमराज का नोटिस

सम्पादकीय

एक बार यमराज के दूत मृत्यु के पश्चात एक वकील को धर्मराज के पास लेकर पहुंचे। धर्मराज ने वकील को कहा— आपने जीवन भर पाप कृत्य किये हैं। रात दिन पैसे बटोरने में लगे रहे। वाक्जाल में संसार को फंसाकर झूठे को सच्चा और सच्चे को झूठा बताते रहे। अत: मैं तुम्हें नरक भेज रहा हूँ।

वकील ने धर्मराज से कहा—''आप कानून की अवहेलना कर रहे हैं। कानून की दृष्टि से पहले नोटिस देना चाहिए पर बिना नोटिस दिये ही आपने वारण्ट भिजवा कर मुझे गिरफतार कर यहां बुला लिया है।''

एक क्षण सोचकर धर्मराज ने कहा—''वकील महोदय, आपका कथन सत्य तथ्य पर आधारित नहीं है हमने आपको अनेकों बार नोटिस दिये। सर्वप्रथम आपके काले चमचमाते बालों को श्वेत करना प्रारम्भ किया। नेत्र ज्योति कम की, श्रवण ज्योति मन्द की। अंग प्रत्यंग शिथिल कर दिया। इतने सारे नोटिस के बावजूद भी आप नहीं चेते। सावधान नहीं हुए। फलस्वरूप मृत्यु का वारण्ट निकालकर आपको बुलाया है। अब सीधे नरक में पहुंच जाइये।

वकील के पास इसका उत्तर नहीं था, उसने धीरे से उठकर नरक की राह ली। यही सोचने तक शक्ति मत खर्च लेना कि परमात्मा को जवाब क्या देंगे। कुछ ऐसा करें कि प्रश्न पैदा न हो सके।

प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरू देव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज

''जासु नाम सुमरत इक वारा, नर उतरहिं भव सिन्धु अपारा।
जासु नाम सुमरत क्षण माहिं, सकल अमंगल मूल नसाहिं।''
ब्रह्म राम ते नाम बड़,वरदायक वरदान।
जल पर माने माछरी, कुल पर माने बुद्ध। जैसा जाको गुरू मिला, तैसी ताको सुद्ध।।''

भगवद प्रेमी सज्जनों सत्संग की गंगा इससे पहले भी इस नगर में आई है, बार-बार प्रवचन हो चुके हैं, मिली जुली हुई बात कहने की हमारी आदत नहीं, चापलूसी की, लोगों का मुंह देखने की हमारी आदत नहीं, लोगों को प्रसन्न करने की कोई योजना नहीं क्योंकि कुछ ठगना नहीं, कुछ लेना नहीं और फिर कहन क्या है ? कहना है कि हे प्रेमी ! परम कल्याण ! परम कल्याण से तात्पर्य जिसकी एक जड़ पकड़ी जाए, एक बार जड़ लग जाए वो लौटे नहीं यानि वो वस्तु प्राप्त हो जाए जिसे कभी काल छू नहीं सकता। काल लख झोरे, कुछ करे उसका पता लग जाना दूसरे शब्दों में अमर सुनते तो हैं। 'अ' 'मर' जो न मरे। अजर जो कभी न फटे। अविनाशी जो कभी नाश न हो। परन्तु ये बातें न रह जाएं, जो वाचक है उसका वाच्य क्या ? यह जो वाचक शब्द है अमर(कभी नहीं मरता) यह तो वाचक शब्द हो गये, इनका वाच्य क्या ? सत। यह तो कहा गया, यह तो अक्षर हो गये। जैसे आग कहा। जिव्हा को कोई फर्क न पड़ा, बर्फ कहा तो कोई फर्क न पड़ा। हे प्राणी ! इसी प्रकार कहना तो सीख गये, रटना तो सीख गये, गा तो लिया, पढ़ तो लिया, पाठ तो कर लिए परन्तु है क्या ? जीवन भर भटक भटक कर रह जाएगा लेकिन यह पता न चलेगा ऐसा सब ग्रन्थों का यथार्थ तात्पर्य है और यह बात अनुभव की भी है। मुझे एक बहुत पुरानी बात याद आ गई जिन दिनों मौलाना आज़ाद शिक्षा मंत्री थे, उन दिनों का वाक्य है। हरिद्वार में बहुत बड़ा सम्मेलन था तो गुरू महाराज जी के शिष्यों ने, भक्तों ने इन को बुलाया, आमंत्रित किया। वो स्वयं तो न आए उन्होंने अपना प्राईवेट सैक्रेटरी भेजा और तब गुरू महाराज जी ने पूछा कि और तुम लोगों से बातें क्या करें जो तुम्हारा कार्य है इस समय उसी के ऊपर वार्ता करें। पाठशाला की पुस्तकों में छठी सातवीं कक्षा की किताबों में यह दोहे पढ़ाए जाते हैं:—

''माला फेरत युग गया फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।''

तो इसके बारे में क्या कहोगे। तो उन्होंने कहा कि माला फेरते-फेरते युग बीत गया पर मन को विषयों की ओर से नहीं फिराना आया ठीक यह शब्द थे, अब हाथ की माला को रख दो, मन की माला को फेर। गुरू महाराज जी ने पूछा कि दोहा कह रहा है कि **''माला फेरत युग गया पाया न मन का फेर, कर का मनका डार दे मन का मनका फेर''** और तुम कह रहे हो कि मन को विषयों की ओर से नहीं फिराना आया, माला फेरते फेरते तो युग बीत गया यह तो ठीक पर यह जो कह रहे हो कि मन विषयों की औऱ से फिराना नहीं आया। दोहे में से यह कौन से शब्द का अर्थ लगाया। लगभग लगभग ऐसा पढ़ाने में लगे हैं। जो लड़का पढ़ लिखकर मास्टर लग गया, वो भी फिर यही पढ़ाएगा।

लीक लाक गाड़ी चले लीक लीक चले कपूत।

तो मेरा भाई इसके बारे कभी खास सोचा नहीं। गुरू महाराज जी ने पूछा क्यों छपाया, कितना कागज़ खराब हुआ कितनी स्याही खराब हुई कितना

वक्त बेकार जा रहा है अगर कोई खास तात्पर्य नहीं। यह तो और बेहुदी बात है। तो गुरू महाराज ने पूछा कि अगर एक शब्द का अर्थ लड़के को न आता हो तो मास्टर से पूछा जाता, मास्टर को भी न आता हो तो इन्सपैक्टर से पूछा जाए, इन्सपैक्टर को भी न आता हो तो डायरैक्टर साहिब से पूछा जाए, डायरैक्टर साहिब को न आता हो तो मिनिस्टर साहिब से पूछा जाए। अफसोस मिनिस्टर साहिब को भी किसी शब्द का अर्थ न आता हो तो किस से पूछा जाए.....अन्धकार। तो फिर कहने जा रहे थे हे प्रेमी! इस विषय में बहुत प्रश्न हैं, एक आध नहीं। लटके हैं उलझे हैं:— **कहते हैं करते नहीं मुंह के बड़े लबार''** लबर लबर पढ़ रहा है, रट रहा है। क्या कह रहा है नहीं पता। गा क्या रहा है नहीं पता अज्ञान बना है क्या नहीं पता—मैं कहने जा रहा था साक्षात बात। घटना घटने लगे, कोई कारण बने तो उस समय पर क्या करें हमारे शास्त्र कह रहे हैं:—

''अन्त कालेच मामेव स्मरण, मुक्तवाच कलेवरम'' कि अन्त समय जो सुमिरण करते शरीर को छोड़ जाता है वो साक्षात मुझे मिलता है। भगवान कह रहे हैं गीता अ:8 श:6 अन्त समय सुमिरण क्या करे? कैसे करें? क्या होता है सुमिरण? तो कह दोगे कि राम-राम कहें या जो गुरू ने कह दिया वो कहें। हे प्राणी! यह सुमिरण नहीं। कोई भूल में न रह जाना। यह तो रटन है। सुमिरण शब्द का अर्थ क्या है। सुमिरण का अर्थ है याद, स्मरण किया कौन करता है। जिह्वा का कोई काम नहीं। सुमिरण हृदय से है। जरा इस बात को खोजो। बच्चे की याद हृदय से करते हो, पत्नी की याद हृदय से करते हो, न माला लेते, न कुछ रटते। मित्र की याद, शत्रु की याद हृदय से आती है, कहने की बात ही नहीं—सोचो जरा। जरा इन बातों को प्रत्यक्ष देखो फिर कहने जा रहे थे कि भगवान की याद का नम्बर आया। भगवान का कुछ पता नहीं। लेन देन नहीं। भगवान से तात्पर्य रूक कर, टिक कर, ठहर कर सोच कुछ वो हस्ती वो शक्ति जिससे तूं चल रहा है, बोल रहा है, विद्या पढ़ सक रहा है, मन्त्र जप सक रहा है, जब वो निकल जायेगा तो न मन्त्र जप सकेगा, न हवन कर सकेगा, तो क्या निकल जाता है, इसमें से जब तक उस का पता ही नहीं तो याद किसकी। याद आवे तब अगर पता होवे। जिस का पता होवे। जिस का पता नहीं भला उसकी याद कैसे, कब क्या कर भूल कर भी याद नहीं आ सकती, सोच? अब रही बात अगर ऊपर जो किसी से सुना, ऊपर अगर कुछ प्रतिमाओं के दर्शन कर लिए, कहीं तीर्थों में जा आए, कुछ भी कर लिया तो तुझे विचार करना है इस बात पर, लक्ष्मण जी पूछते हैं:—

माया क्या है? ईश्वर क्या? जीव क्या?
सुनाते हैं कथा अपनी, भटकते हो गयी देरी
कोई मूर्त के पूजन को बतावे होम करने को
कोई तीर्थ के दर्शन को, फिराते हैं सदा फेरी,
बता दो मोक्ष का मार्ग, गुरू जी मैं शरण हूं तेरी'

तो कहते हैं कि जगत में नाना प्रकार के बड़े-बड़े भारी पन्थ हैं, अपनी अपनी कथा तो कह रहे पर भटकते-भटकते बहुत देरी हो गयी है। **''कोई मूर्त के पूजन को बतावे होम करने को''** कोई मूर्ती पूजा पर जोर दे रहा है, कोई तीर्थ यात्राओं में फिरा रहे हैं, अनेक प्रकार के जितने मुंह उतनी बोलियां फिर कहते हैं:— **किताबें धर्म चर्च की हज़ारों बांच कर देखी, मिटा संशय नहीं मन का, अकल जंजाल ने घेरी''** जिन में धर्म चर्चा है ऐसी पुस्तकें हज़ारों पढ़ कर देख ली, परन्तु मेरे मन का संशय, भ्रम दूर न हुआ।

''सुना मैने रूप ईश्वर का सकल जग में समाया है।
वो ब्रह्मानन्द बिन देखे मिटे नहीं भ्रमणा मेरी''

कि मैंने सुना तो है कि ईश्वर का स्वरूप सारे संसार में समया है पर वो कैसा है? मैंने देखा नहीं, मैंने जाना नहीं। इस कारण से भ्रम दूर नहीं हो रहे। तो इसी प्रकार से फिर कहने जा रहे थे कि जब गुरू महाराज जी की शरण मिल गई तो गाते:—

''मेरे मन का भ्रम मिटाया,
गुरू कर कमलों की छाया।
बहा जात था भव धारा में,
मल विक्षेप कीचड़ गारा में।
गुरू अपने हाथ उठाया,
गुरू कर कमलो की छाया''

समझाई गुरू अकथ कहानी अकथ मतलब कहने से परे। नामरूप दोऊ अकथ कहानी, समझत सुखद न परत बखानी''**''अगुण सगुण विच नाम सुसाखी उभय प्रबोद्धक चतुर दुभाखी''** जिसको पहले कह गये हैं **''अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी''** कहते हैं निराकार और साकार दोनों में, जैसे लगभग सन 1945-47 के बीच वाक्य है। एक कोई ब्राह्मण था, सुन्दर था, गौर वर्ण था, वह बनारस गया और साथ में मण्डली लिए हुए तो एक आदमी ऐसा मिल गया कि मैं तो सब कुछ न्योछावर कर दूं अगर भगवान दर्शन देवें। तो जुण्डली बनाई, एकता खड़ी की और कुछ इस प्रकार का प्रोग्राम बना लिया, कहीं जंगल में एकान्त में कोई गुफा बगैरा घर में खोदकर कुछ इस प्रकार की रोशनी टेढ़ी पड़े अब जो वो सुन्दर सा प्राणी(ब्राह्मण) था, कपड़े पहनाये सब प्रकार से, जैसे चित्रों में देखे, सुन्दर से सुन्दर कपड़े पहनाये मुर्ली हाथ में ले ली, ऐसे उसको ले गये जहां कहीं बनावटें बनाई होंगी—ऐसे-ऐसे दूर से दर्शन होंगे निकट नहीं जाने दिया जायेगा जिस प्रकार से पर सब कुछ न्योछावर करना पड़ेगा, यह पता लग चुका था उस आदमी का जो दोनों का मेल कराता है, जो चतुर दो भाषिया है दोनों भाषाओं को जानने वाला हो। मान लो एक आदमी को हिन्दी आती हो तो मद्रासी भाषा नहीं आती, दूसरे आदमी को मद्रासी भाषा तो आती हो पर हिन्दी भाषा नहीं आती, वो बात करना चाहें तो पूरा न उतरेंगे क्योंकि वो उसकी बात न समझें। पर एक कोई ऐसा प्राणी जो हिन्दी भाषा भी जाने और मद्रासी भाषा भी जाने। इस ने क्या कहा उसे मद्रासी भाषा में समझा देवे, मद्रासी भाषा वाले ने क्या कहा उसे समझा देवे हिन्दी भाषा में। एक बार की बात है, बनारस का एक आदमी राजपूत था और जब वो मद्रास गया, मुसलमान यहां भी हैं उर्दू जानते ही हैं।किसी मुसलमान से पता पूछा। किसी ब्राह्मण का पता पूछा था मुसलमान से। उसने ब्राह्मण के घर पहुंचा दिया घर पर ब्राह्मण तो नहीं था, परन्तु पत्नी थी और उस मुसलमान ने कहा कि फलां को मिलने आये हैं और पत्नी ने कहा मद्रासी भाषा में कहा कि वो तो हैं नहीं यहां। मुसलमान ने फिर उसको समझाया कि यहां नहीं। यह बेचारा मायूस होकर चल पड़ा जब चल पड़ा तो ब्राह्मण पत्नी ने मद्रासी भाषा में मुसलमान से पूछा कि यह कौन थे? कहां से आये तो उसने मद्रासी भाषा में कहा कि बनारस से आये हैं। तब उस बेचारी को फुर्सत न हुई कि इसको कहुं कि बुलाओ उनको। वो बात जल्दी से कहती, कहां से इतनी दूर से आया मैंने बिठाया नहीं तब वो क्या कहती ''रंडी, रंडी, रंडी, रंडी'' उसने पीछे मुड़कर देखा कि गाली क्यों निकालने लग गई। मैंने तो कुछ देखा ही नहीं। पर उसकी भाषा में 'रंडी' शब्द का अर्थ होगा कि जल्दी लौट आओ। जिस आदमी से बात हुई उसने बताया था खुद मुझे। मैं बात कहने जा रहा था प्रेमी सुमिरण की बात। उसके हृदय में 'रंडी' शब्द का अर्थ जल्दी लौट आओ लौट आओ, वापिस आओ और इस हृदय में 'रंड़ी' का अर्थ एक गाली है। यानि जो हृदय अर्थ समझता है, उसको हम लेते हैं। एक बात। दूसरी तरफ को जरा लौटकर और आओ कि चतुर दो भाषी करके कहते हैं। वो चतुर दो भाषिया क्या है? वो भगवान का सच्चा नाम है जो निराकार तथा साकार दोनों को मिलाने वाला है। निराकार को भी बताने वाला, साकार को भी। प्रेमी उससे पहले कुछ कहे जा। राम को खोजेगा तो प्रतिमायों से ज्यादा आगे न जा सकेगा, और प्रतिमाएं बहुत प्रकार के पहले तो जैसे थीं अब जो रामानन्द सागर ने चित्र दिया राम का यह होने लग गया पूजनीय। महाभारत में कृष्ण का जो चित्र दिया वो होने लग गया हृदय में। हे प्राणी!

सब इन बातों को काल खा जाएगा। तूं देखता रह जाएगा, वह सुमिरण नहीं, चित्त कहां जोड़े मन को कहां जोड़े जिसे काल न खाए। बस एक सवाल है। यह सवाल हल न होगा। एक करोड़ पाठ कर जा, कुछ बात नहीं बनेगी। सारे तीर्थों का भ्रमण कर जा सन्त ब्रह्मानन्द जी बड़े अच्छे सन्त हो चुके हैं कहते हैं:—

'' **बता दो मोक्ष का मार्ग गुरू जी मैं शरण हूं तेरी।**
जगत के बीच में नाना, किस्म के पन्थ हैं भारी।''

ब्रह्म क्या? भक्ति क्या? जब यह प्रश्न रखे तो सब से पहले श्री भगवान उत्तर देते हैं जिन्हें आज भगवान कहा जाता है और उस समय नहीं जरा खोज कर देखना। समय पर नहीं कहा गया। अब किसी ने कहलवाया कवियों ने, विद्वानों ने, साधुओं ने कहलवाया—यथार्थ में तेरा क्या? तुने कब कैसे जाना? समय पर नहीं, ''**राऊर जन्म सुनी सुत्त काना, मानऊँ ब्रह्मानन्द समाना**'' दासी ने ला कर दरबार में तीन बार पुकार की महाराज की जय हो, जय हो। राजा दशरथ ने ध्यान दिया कि रणवास से दासी आई है— पूछा कहो— महाराज को बधाई हो, महाराज के घर पुत्र रत्न पधारे हैं। जब यह सुना तो तब क्या कह रहे हैं शास्त्रकार:-''**राऊर जन्म सुनी सुत काना**'' सुत कहते हैं पुत्र को। उस समय राम नहीं कहा गया। 'राम' किस ने कहा—त्रिकाल दर्शी सदगुरूदेव ने यह देखा कि सब में समाया, सब में रमा है, सबके घट-घट का वासी है, इसलिए इनका बाहरी नाम रखना चाहिए 'राम'। हम किस की बात कह रहे हैं, कहां जा रहे हैं। जिस हस्ती शक्ति ने अवतार लिया- वो पहले भी था आज भी है, आगे भी रहेगा। उस का नाम क्या? अगर यह खोज जायोगे-वह नाम क्या? या यूं कहो वह अकाल नाम क्या? अकाल मतलब जिस को कभी काल नहीं खाता। कभी मौत छू नहीं सकती जिस को। ऐसा नाम क्या? ऐसा नाम कोई खोज जाएगा-गाते हो-''**ब्रह्म राम ते नाम बढ़**'' ब्रह्म से भी बड़ा, परम ब्रह्म कुछ कह लो ''ब्रह्म राम ते नाम बड़'' राम से बड़ा- क्या बड़ा नाम 'नाम' ''बरदायक वरदान'' जो वर देने वाली शक्तियां हैं- देवी देवता सिद्ध पीर कुछ भी कहो। जो वर दे सक रहे हैं। श्राप दे सक रहे हैं। सर दे दिया। किसी को श्राप दे दिया है किसी को :—

ब्रह्म राम ते नाम बढ़ वरदायक वरदान।
राम चरित सति कोटि महि लियो महेश जिय जान।।

ऐसा नाम जो वर देने वालों को भी शक्ति देता है- ऐसा नाम जो ब्रह्म से भी बड़ा है। भगवान के सौ करोड़ चरित्रों में से सौ करोड़ लीलाओं में से, सौ करोड़ गुणों में से एक यह भी गुण था जिसे भगवान शंकर ने अपने हृदय में जान लिया ''**लियो महेश जिय जान**'' जिय यानि हृदय, अपने हृदय में धारण कर लिया यानि पकड़ लिया। भगवान शंकर ने धारण किया पर तूं धारण करने से डरता है। तूं पकडने से डरता है, बाहर रहेगा, राम न पहचानेगा। एक प्रश्न काफी है, मुद्दतों से चला आ रहा है। एक तरफ तो बहुत बड़ी सिद्धियों का मालिक बहुत बड़ी हस्ती शक्तियों का मालिक रावण है। सिद्धियां क्यों करता है? भोग भोगने के लिए। शक्ति क्यों संचित करता है, भोगों के लिए। एक तरफ तो वो हो गया दूसरी तरफ खोजोगे माता पार्वती, बड़ी भारी पतिव्रता स्त्री है। भगवान शंकर की प्रिय पत्नी है। इतना होते हुए भी उनको सवाल है कि राम क्या? रावण को सवाल है कि नाम क्या?

''**भूप सहस दस एक ही बारा,**
लगे उठावन टरहिं न टारा''

दस हजार राजा इकट्ठे हुए हैं। राजा जनक की सभा में धनुष यज्ञ के निमित। क्या उनकी नीयत को पकड़ेगा जरा कि क्यों इकट्ठे हुए? जिन्हें हम जगत जननी माता सीता कहते हैं उनसे शादी करने की नीयत से। मैं उस बात की पुष्टि कर रहा हूं तुझे किसी ने कहा कि यह भगवान् यह कह, यह कह। आदि काल का पता ही नहीं कि क्या कहते थे। जो कुछ रट रहा है, जो आरतियां कर रहा है रटी हुई हैं किसी न किसी

के द्वारा। कह रहा है—

''कहत शिवानन्द स्वामी, मन बांछित फल पावे''

गा तो रहा है, कौन है वो शिवानन्द स्वामी? उनसे पहले लोग क्या कहा करते थे? जब श्री राम जी का अवतार हुआ तो उस समय लोग क्या कहते थे? क्यों राम नहीं जाना, न कृष्ण को जाना। जरा इस बात को फिर ध्यान से देखना।

भूप सहस दस एकहिं बारा,
लगे उठावन टरहिं न टारा''

दस हजार राजा- पर कोई ऐसा न सोच लेना, कुतर्की लोग अल्पमतिया लोग कहते हैं कि दस हजार लोग हाथ भी कैसे लगा सकते हैं। यह बात ठीक है। उन दस हजार राजाओं में से जिन-जिन राजाओं को आगे किया कि हमारी तरफ से तुम सब से बलवान हो चल हम तुझे चुनते हैं। ऐसे-ऐसे करके सब जुदा-जुदा उठा कर देख चुके पर धनुष उठना तो दूर रहा हिला तक नहीं सके **''टरहिं न टारा''** यह बात झूठ नहीं है। आगे मैं नहीं ले जाता कथा कहानियां सुना कर समय जाया होगा प्रलोभन में बहकाएगा, लालची तो कथा तक ही रखेगा। कुछ दूध के लोभी गवाले शहरों में लगभग ऐसा होता है कि बछड़ों को दूध न पिलाया नमक चटा दिया, फिर पानी न पिलाया, फिर बहुत पानी पिला दिया। यानि किसी प्रकार से मर जाए। फिर खाल खिंचवाई और भुस भरवा दिया उसमें और टांग दिया किसी किल्ली पर वो ताकि गाय समझे कि बछड़ा है उसे चाटे, जब गाय का दूध दोहना हो तो उसके आगे कर दिया, गाय उसे चाटकर,दूध उतार देवे। क्यों किया ऐसा? क्यों मुर्दा पशुओं का चमड़ा रखा? प्रलोभन के लिए मेरे पास ऐसी प्रलोभन की बातें नहीं, समय जाया करने के लिए नहीं। मैं समझाने के लिए कह रहा हूं—हे दुनिया के लोगो चेतो, जागो, खोजो, पूछो, सुनो। तो फिर कहने जा रहे थे कि एक प्रश्न है-किसी के पास उत्तर हो तो दो। हे दुनियां के लोगों समय पर राम को नहीं माना, गर माना तो माना तो बहुत कम गिने चुने भक्तों ने। शास्त्र कह रहा है—

गुरू विवेक सागर जग जाना,
जिन कर विश्व यह वदर समाना।।

जिन के सन्मुख ये संसार ऐसा है जैसे बेर-कोई पकड़ गया। एक बात पर कोई विचार कर गया तो आगे बहुत सरल मार्ग हो जाएगा। निर्णय तो सत्त असत्त का तेरे हृदय ने लेना तो काम चलेगा। यह बात याद रखना। यो यह बात कहने जा रहे थे सदैव से अनादि काल से कहो न ठीक है कि यह प्रश्—राम क्या है? जो राम को मानते हैं उनके आगे भी जो नहीं मानते उन के आगे भी राम क्या? साधारण प्रश्न नहीं। एक और तो देखोगे कि त्रेता युग से लेकर जो जो भी कोई तत्ववेता महापुरूष हुए वो सब के सब श्री राम का ही गुणानवाद गा रहे हैं, सब, सब, सब। कोई बाकी नहीं और दूसरी तरफ रावणवादी भी। रावणवादी आज तक निन्दा करते आ रहे हैं, निन्दा ही करते चले आ रहे हैं। हे प्राणी! सब में से कुछ एक लोग ऐसे हुए जिन्होंने जाना माना नहीं। क्या जाना? तो उसके बारे में पहले कह गये:—

क्रमश.....

The defination of God and Man. Man is an infinite circle whose circum-stance is no where, but centre is located in one spot;
God is an infinite circle whose circumstances is nowwhere, but whose centre is everywhere.

S.Vivekanand G

श्री गुरूदेव—भवहारी

गुरू मानुष कर जानते, ते नर कहिए अंध। महां दुखी संसार में आगे यम का फंद।।
कबीरा ते नर अंध हैं, गुरू को कहते और। हरि रूठे गुरू शरण है, गुरू रूठे नहीं ठौर।।

प्रिय गुरू भाई, बहनों एवं प्रभु प्रेमियों गुरू भक्ति की आवश्यकता जीव को क्यों है ? क्यों वेद शास्त्रों के अन्दर इसकी महिमा को इतना ऊंचा वर्णन किया गया है ? इसका उत्तर यह है कि जीव काल और कर्म के चक्कर में आकर अपने स्वरूप को भूल बैठा है। अपनी असली अवस्था से गिर कर इस तरह गुमराह हो गया है कि उसे यह ज्ञान भी नहीं रहा कि वह कौन है ? कहां से आया है ? और कहां जायेगा ? इसे क्या करना था और क्या कर रहा है। माया और काल के चक्कर में आकर ऐसा घिर गया जैसे रेशम का कीड़ा अपने अन्दर से तार निकाल कर उससे बन्ध जाता है या जैसे बन्दर चने की मुट्ठी के लोभ में अपने आप को कैदी समझने लगता है। इसी प्रकार यह जीव भ्रम जाल में बन्ध कर संसारी बना बैठा है। इस सुख दुख की अवस्था से पार होने के लिए, इस कैद व बन्धन की हालत से छुटकारा पाने के लिए, इस भ्रम जाल के चक्कर से मुक्त होने के लिए, गुरू की झलकती हुई पवित्र मूर्ति के प्रकट होते ही हमारे दबे हुए आत्मिक संस्कार उबरे और हमारा सम्बन्ध उस हस्ती के साथ जुड़ा। श्री गुरू महाराज जी का आदर्श सामने रखते ही उनकी पवित्रता का भाग हमें मिला। हमारे दबे हुए संस्कारों ने उभर कर अपना रूख ऊपर की तरफ किया और हमें अपने स्वरूप का ज्ञान होने लगा। यह गुरू की शरण में आने का असली तात्पर्य है। आम लोग गुरू धारण करने का अभिप्राय कम समझते हैं, वे समझते हैं कि गुरू शायद उनकी कोई विचित्र और नई वस्तु बना देगा, लेकिन गुरू धारण करने का भाव यह नहीं है। यह जीव वास्तव में जो कुछ है, वही रहेगा। गुरू इस को किसी नई सृष्टि में नहीं भेजता। जिस अपनी हकीकत को यह चिरकाल से संसार में रहता हुआ खो बैठा है, गुरू इसकी हकीकत को फिर इसे वापिस देता है। जिस भूल भ्रम में पड़ कर इस नें अपनी वास्तविक अवस्था को खो दिया है, गुरू इसकी वही खोई हुई हालत इस को वख्शता है जब तक गुरू धारण नहीं किया जाता तब तक जीव में मनुष्य जीवन के गुण दबे पड़े रहते हैं। यह गुरू ही है जिसके द्वारा हमारी दबी हुई आत्मिक शक्तियां उभरती और प्रकाशमान होती हैं। सोना जब तक सुनार के हाथ नहीं पहुंचता, किसी काम का नहीं होता। अगर उसका मुल्य है तो वह केवल इस कारण से है कि सुनार के पास जाकर उसके आभूषण बन सकते हैं। जब वह सुनार की भट्ठी से गुजर कर आभूषणों के रूप में बदल जाता है तब उसका असल मुल्य पड़ता है। वह आप सुन्दर बनता है और पहनने वालों को सुन्दरता प्रदान करता है। इसी तरह बिना गुरू के जीव की कोई कीमत नहीं है। वह गुरू ही है जो जीव को सचमुच जीव बनाता है वरना इसके सिवाय जीव केवल नाम का जीव होता है।

निगुरे जीव को महापुरूषों ने आत्मघाती का नाम दिया है क्योंकि वह अपनी आत्मा का हनन कर रहा है। वह जीवन के रास्ते में नहीं है। वह जीता हुआ भी मौत के मुंह में जा रहा है। ऐसे आत्मघाती के सम्बन्ध में कबीर साहिब जी फरमाते हैं कि —वह हजारों पादियों से भी बुरा है। उसके सिर पर लाखों पापियों का बोझ समझना चाहिए। क्योंकि पापियों के उद्धार का रास्ता तो कभी न कभी खुल जायेगा परन्तु निगुरे के तरने का कुदरत ने कोई भी प्रबन्ध नहीं है।

इसलिये इस अनमोल चोले को प्राप्त करके हर जीव को चाहिये कि जितनी जल्दी हो सके पूर्ण गुरू की शरण धारण करें और उनके बताये हुये मार्ग पर चल कर तथा अपने ही घट में उस परमपिता परमात्मा को जानकर अपने जीवन के कल्याण करें जी।

सदगुरू के बलिहार

बड़ा प्यारा सा शब्द है सदगुरू। गुरू के दायरे से बाहर की बात। गुरू का अर्थ नीचे ही रह जाता। सदगुरू है ऊंची उठी हुई अवस्था। कुछ महांपुरुषों ने सदगुरू के लिए गुरू शब्द का भी प्रयोग किया है पर यहीं से यह समस्या भी उत्पन्न हुई कि प्रत्येक क्षेत्र का शिक्षक भी अपने को गुरू समझने लगा। धीरे-धीरे गुरू शब्द का वास्तविक महत्व धूमिल होता गया पर सदगुरू शब्द के साथ ऐसी धोखेबाज़ी संभव न थी क्योंकि सदगुरू शब्द की कुछ विशेषता है। ऐसी विशेषता कि किसी और तरफ को अर्थ नहीं लिया जा सकता सदगुरू का। गुरू शब्द का प्रयोग तो अध्यापक, दवाई देने वाले वैद्य, माता, पिता, बड़े बुजुर्ग, पण्डितों, पुरोहितों, मांगने वालों, सिद्धों, पीरों, पितरों, संस्कार विधियां करवाने वालों, पाठ पढ़ाने वालों, कारीगरी सिखाने वालों, इत्यादि सब के लिए हो सकता है, होता भी है पर सदगुरू शब्द अपने आप में अनोखा है। जो केवल एक विषय के साथ ही पैदा होता है। सदगुरू की पैदाइश सदशिष्य के साथ ही होती है।

सदगुरू वो है जिससे तुम्हारी बुझी ज्योति प्रज्वलित हो उठती है। सदगुरू का अर्थ कि जिससे तम्हें अपने आप की सुध आई। जिसके होने मात्र से ही तुम मिट गए। तुम, तुम न रह गए। तुम वास्तविक स्वरूप को उपलब्ध हो गये। तुम्हारी अपने वास्तविक स्वरूप को उपलब्ध होने की स्थिती में जो बाधा थी उसके मिटने का अर्थ ही है सदगुरू का मिलन। दूसरी बात कही जाती है बलिहार पर सही अर्थों में जब बलिहार हुए तभी सदगुरू की समझ आती है। बलिहार का अर्थ है-सब बल हार जाना। सब बल का अर्थ यह नहीं कि केवल शारीरिक शक्ति अपितु वो सब पदार्थ जिससे तुम शक्तिशाली अनुभव करते हो। फिर चाहे वो धन हो या लोग, पैसा हो या ज़मीन। जो भी तुम्हारे अहंकार का स्त्रोत है वो किसी न किसी के लिए तुम बल रूप में प्रयोग कर सकते हो। ध्यान रखना ये सब बल संसार का प्रत्येक कार्य सिद्ध करवाने में सहायक साबित होते हैं परन्तु परमात्मा की प्राप्ति में ये सब मिलकर भी सहायक सिद्ध नहीं हो पाते। पर जब जीवन में तुम्हें सत्य की चोट मारने वाला मिल जाए। कोई ऐसा मिल जाए जो तुम्हारे लिए नानक, बुद्ध, गोरख, कृष्ण या ईसा, मोहम्मद की तरह हो वहां पर बलिहार हो जाना। अन्य कहीं ये बल बांटने चढ़ाने की जरूरत नहीं। सिर्फ वहीं इन्हें हारना जहां तुम्हारी सत्ता को, अहं को कोई झकझोर सके। यदि यह समस्या हो कि उस प्रबुद्ध को पहचानें कैसे तो समझ लेना कि जिसके वचन, जिसकी स्थिती तुझे सर्वाधिक चोट पहुंचाए। जिससे तेरा मन खण्डित होना शुरू हो सके। जहां तूं तर्क करने को उतारू हो जाए। बस वहीं अपने आप को रोक लेना और चरण पकड़ लेना। सदगुरू के सामने अपने अवगुण को नियंत्रित करना ही होता है ''बलिहार होना''

सब प्रकार की अहं सामग्री से वो नहीं पाया जा सकता जो श्री सदगुरू के चरणों में बलिहार होकर पाया जा सकता है। बलिहार होने पर ही भक्त कहता है। '' मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।'' भक्त ने धन चढ़ाया या नहीं, यह जरूरी नहीं। घर बार छोड़ा या नहीं यह भी जरूरी नहीं। जरूरी है कि जो धन की कीमत मन नें आंक रखी थी क्या वो कीमत मिटी। यदि कीमत मिट गई तो धन कभी माया नहीं बन सकेगा केवल सिक्के या कागज़ के टुकड़े ही रह जाएंगे पदार्थ को खत्म करने से उसके प्रति वासना मिट नहीं जाती। वासना के मिट जाने से पदार्थ अर्पित हो जाता है। वह होकर भी तुम्हें प्रभावित नहीं कर पाता।

ਦੋਹਾਵਲੀ

1. ਕਬੀਰ ਮੇਰੀ ਸਿਮਰਨੀ ਰਸਨਾ ਉਪਰਿ ਰਾਮ।
ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਸਗਲ ਭਗਤ ਤਾਕੋ ਮਨਿ ਵਿਸ਼ਰਾਮ।

2. ਮੈਂ ਗੁਨ ਨਧਿ ਸਗਲ ਕੀ ਜੀਵਨੀ ਮੇਰੀ, ਜੀਵਨ ਮੇਰੇ ਦਾਸ,
ਨਾਮਦੇਵ ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਐਸੀ ਤੈਸੇ, ਤਾ ਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰਗਾਸ।

3. ਅਜਗਰ ਕਰੇ ਨਾ ਚਾਕਰੀ ਪੰਛੀ ਕਰੇ ਨ ਦਾਮ।
ਦਾਸ ਮਲੂਕਾ ਕਹ ਗਏ, ਸਬਕੇ ਦਾਤਾ ਰਾਮ।

4. ਕਹੇ ਕਬੀਰ ਅਬ ਜਾਨਿਆ, ਗੁਰੂ ਗਿਆਨ ਦੀਆ ਸਮਝਾਏ।
ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਹੀ ਭੇਟਿਆ, ਅਬ ਮਨ ਕਹੀ ਨ ਜਾਏ।

5. ਆਠ ਪਹਿਰ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰੋ ਪ੍ਰਾਨੀ ਸਹਿਜ ਸੁਭਾਅ ਬੋਲੋ ਪ੍ਰਭੁ ਬਾਣੀ।
ਜਮ ਦੁਖ ਮਰਨ ਨੇੜੇ ਨਹਿ ਆਵੇ, ਜੋ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਕਾ ਨਾਮ ਧਿਆਵੇ॥

6. ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖੋਜਦੇ, ਸੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਇਆ।
ਪਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਰੂ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਨੀ, ਸੱਚਾ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ॥

7. ਯਹ ਮਨ ਦੇਵੀ ਦੇਵਤਾ ਯਹ ਮਨ ਭੂਤ ਪਿਸ਼ਾਚ,
ਯਹ ਮਨ ਹਰਿ ਹੋ ਜਾਤ ਹੈ ਜੋ ਹਰਿ ਭਜੈ ਸੁਜਾਤ॥

8. ਬਹੁਤ ਮਨਾਏ ਦੇਵੀ ਦੇਵਤਾ, ਬਹੁਤ ਮਨਾਏ ਸਿੱਧ ਪੀਰ।
ਇਕ ਪਰਵਾਨਾ ਯਮਰਾਜ ਭੇਜਿਆ ਜਾਣਾ ਪੜੇ ਅਖੀਰ॥

9. ਭੈਰੋਂ ਕਾਲੀ ਗਣਪਤੀ ਕੋਈ ਪੂਜਤ ਹਨੂਮੰਤ।
ਕਹੋ ਕਬੀਰ ਪ੍ਰਭੂ ਨ ਮਿਲੈ, ਬਿਨ ਕੋਈ ਸਾਚਾ ਸੰਤ॥

10. ਚਤੁਰਾਈ ਚੂਲ੍ਹੇ ਪੜੇ ਭੱਠੀ ਪੜੇ ਆਚਾਰ।
ਤੁਲਸੀਦਾਸ ਗੁਰੂ ਕਰੁਣਾ ਬਿਣ, ਚਾਰੋਂ ਵਰਣ ਚਮਾਰ॥

11. ਪਾਠ, ਵਰਤ, ਪੂਜਾ ਕਰੇ, ਕਰਤਾ ਤੀਰਥ ਸਨਾਨ।
ਕਿਆ ਸਮਝਾਏ ਮੂਰਖਾ, ਇਨਮੇਂ ਨਾ ਮਨ ਮਾਨ॥

12. ਰੋਗਗ੍ਰਸਤ ਮਨਵਾ ਤੇਰਾ, ਦਾਰੂ ਕਰਾ ਸਰੀਰ।
ਭੋਂਦੂ ਇਹ ਹੋਏ ਨਹੀਂ, ਵੱਜਰ ਕਟੈ ਸ਼ਮਸ਼ੀਰ॥

13. ਵਸਤੂ ਕਹੀਂ ਢੂੰਢੇ ਕਹੀਂ ਕਹੀ ਵਿਧੀ ਆਵੇ ਹਾਥ।
ਵਸਤੂ ਤੋ ਤਬ ਪਾਈਐ ਜਬ ਭੇਦੀ ਲੀਨਾ ਸਾਥ॥

14. ਭੇਦੀ ਲੀਨਾ ਸਾਥ ਕਰ ਵਸਤੂ ਦੇਈ ਬਤਾਏ।
ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕਾ ਪੰਥ ਥਾ ਪਲ ਮੇਂ ਪਹੁੰਚਾ ਜਾਏ॥

15. ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਸਿੰਮਤ੍ਰਿ ਸਬ ਸਾਸਤ੍ਰ ਇਨ ਪੜ੍ਹਿਆਂ ਮੁਕਤੀ ਨ ਹੋਈ।
ਇੱਕ ਅੱਖਰ ਜੋ ਗੁਰੂਸੁਖ ਜਾਪੈ ਤਿਸ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਈ॥

ਸ਼੍ਰੀ ਸਦਗੁਰੂ ਚਰਨ ਕਮਲੇ ਭਯੋ ਨਮ

ਮੈਂ ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਹਨਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਕਲਯੁੱਗ ਦੇ ਸਮੇ ਵਿੱਚ ਸੱਚ ਦੇ ਮਾਰਗ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਦੀ ਕੀਮਤ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦਾ ਜਿਹਨਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਸੱਤ ਦੇ ਮਾਰਗ ਤੇ ਲਾਇਆ। ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਸਤਗੁਰੂ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਗਿਆਨ ਤੋਂ ਜੋ ਕੁਝ ਪਾਇਆ, ਸਮਝਿਆ ਤੇ ਅਨੁਭਵ ਕੀਤਾ ਉਸ ਅਨੁਭਵ ਦੇ ਵਚਨ ਸ਼੍ਰੀ ਸਤਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਾਲ ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਸਨਮੁੱਖ ਰੱਖ ਰਿਹਾ ਹਾਂ, ਜਿਹਨਾਂ ਦੀ ਸ਼ਰਣ ਵਿੱਚ ਜਾਕੇ ਮਨੁੱਖੀ ਸਰੀਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਦਾ ਪਤਾ ਚੱਲਿਆ ਤੇ ਸਾਰੇ ਸਦਗ੍ਰੰਥਾਂ ਦੀ ਸੋਝੀ ਪਈ।

ਜਲ ਥਲ ਮਹਿਅਲ ਭਰਿਪੂਰ ਲੀਣਾ, ਘੱਟ-ਘਟ ਜੋਤ ਤੁਮਾਰੀ।
ਸਖਿ ਮਤਿ ਸਭ ਬੁਧਿ ਤੁਮਾਰੀ ਮੰਦਰ ਛਾਵਾ ਤੇਰੇ।
ਭੇਦ ਮਿਲੇ ਭੇਦੀ ਘਰ ਪਹੁੰਚੇ
ਕਹਿਣ ਸੁਣਨ ਸੇ ਨਿਆਰਾ।

ਭੇਦੀ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਭੇਦ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਭੇਦੀ ਹੀ ਉਸ ਗੁਪਤ ਗਹਿਰੀ ਸੱਤਵਸਤੂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਕਰਵਾਏਗਾ। ਭੇਦੀ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰੇਂਗਾ ਤਾਂ ਭੇਦ ਮਿਲੇਗਾ, ਭੇਦੀ ਉਸ ਦਾ ਭੇਦ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਚੀਰ ਕੇ ਨਿਕਲ ਜਾਏ, ਜੋ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬੇ ਨਹੀਂ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਇਸ ਵਿਚੋਂ ਉਡਾਰੀ ਮਾਰ ਜਾਵੇ। ਪਰ ਅਜਿਹਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਲੱਭਣਾਂ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ। ਪਿਛਲੇ ਜਨਮਾਂ ਦੇ ਉਚ ਕਰਮਾਂ ਸਦਕਾ ਹੀ ਐਸਾ ਭੇਦੀ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਪਾਠ-ਪੂਜਾ ਆਦਿ ਧਾਰਮਿਕ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਉਲਝਾਉਨ ਵਾਲੇ ਬਹੁਤ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਤੇਰੇ ਅੰਦਰ ਸਮਝਾ ਦੇਵੇ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੁਰਲਭ ਹੈ। ਉਹ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਵਿਚਾਰ ਨਾਲ। ਸਮਝਨ ਨਾਲ।

ਜਾਗੋ ਹੇ ਨਰ ਜਾਗਨਾ ਅਬ ਜਾਗਨ ਕੀ ਬਾਰ।
ਫਿਰ ਕਿਆ ਜਾਗਿਆ ਨਾਨਕਾ ਜਬ ਸੋਵੇ ਪਾਂਵ ਪਸਾਰ॥

ਫਿਰ ਤੈਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨੇ ਨਹੀਂ ਜਗਾਉਣਾ ਜਦੋਂ ਉਹ ਜੋਤ ਨਿਕਲ ਜਾਏਗੀ ਫਿਰ ਉਸ ਵਿਚ ਦੁਆਰਾ ਜੋਤ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਪਾ ਸਕਦਾ। ਇਸੇ ਲਈ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ ਸਾਨੂੰ ਜੀਵਾਂ ਨੂੰ ਏਹੀ ਚੇਤਾਵਨੀ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹੇ ਮਨੁੱਖ! ਸਤਸੰਗ ਵਿੱਚ ਆਕੇ ਆਪਣਾ ਕਲਿਆਣ ਕਰ ਤਾਂ ਕਿ ਚੌਰਾਸੀ ਦਾ ਚੱਕਰ ਤੇ ਆਵਾਗਮਨ ਮੁੱਕ ਜਾਵੇ। ਜੇਕਰ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਭਜਨ ਨਾ ਕੀਤਾ ਤਾ ਬਾਰ ਬਾਰ ਚੌਰਾਸੀ ਲੱਖ ਜੂਨਾਂ ਵਿਚ ਭਟਕਣਾ ਪਵੇਗਾ। ਕੁੱਤਾ, ਬਿੱਲਾ, ਹਾਥੀ, ਘੋੜਾ, ਕੀੜੀ, ਤੋਤਾ, ਸੱਪ ਆਦਿ ਅਨੇਕਾਂ ਜੂਨਾਂ ਵਿੱਚ ਚੱਕਰ ਕੱਟਣੇ ਪੈਣਗੇ। ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਹੋਕਾ ਦੇ ਦੇ ਕੇ ਸਮਝਾ ਰਹੇ ਕਿ ਹੇ ਦੁਨਿਆਂ ਦੇ ਲੋਕੋ ਚੌਰਾਸੀ ਦੇ ਦੁੱਖਾਂ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਪਾਉ, ਪੂਰਣ ਸੰਤ ਦੀ ਸੰਗਤ ਕਰੋ ਸਤਵਚਨ ਸੁਣੋ ਤਾਂ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਸਤ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੋਵੇ ਜਿਹਨਾਂ ਸਦਗ੍ਰੰਥਾ ਨੂੰ ਅਸੀਮੰਨਦੇ ਹਾਂ ਪੜਦੇ ਹਾਂ ਉਹਨਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰੀਏ ਕਿ ਸਾਡੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਸਾਨੂੰ ਕੀ ਸੰਦੇਸ਼ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਹਨਾ ਜੀਵਾਂ ਦੇ ਬਹੁਤ ਉੱਤਮ ਭਾਗ ਹਨ ਜਿਹਨਾਂ ਦਾ ਸਤਗੁਰੂ ਨਾਲ ਮੇਲ ਹੋਇਆ ਹੈ—

ਭਾਗ ਹੋਆ ਗੁਰੂ ਸੰਤ ਮਿਲਾਇਆ, ਪ੍ਰਭਿ ਅਵਿਨਾਸ਼ੀ ਘਰਿ ਮਹਿ ਪਾਇਆ।

ਜੀਵ ਦੇ ਬੜੇ ਭਾਗ ਹੋਣ ਕਈ ਜਨਮਾਂ ਦਾ ਫਲ ਇਕੱਠਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਫਿਰ ਸਤ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਫਿਰ ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਾਲ ਹੀ ਤੇ ਅੰਦਰ ਤੇਰੇ ਹਿਰਦੇ ਵਿੱਚ ਹੀ ਪਰਕਾਸ਼ ਮਿਲਾ ਦੇਂਦੇ, ਉਹ ਹੀ ਫਿਰ ਪੂਰਨ ਸੰਤ ਤੇ ਉਹ ਫਿਰ ਪੂਰੇ ਹਨ ਜੋ ਪੂਰੇ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦੇਣ।

ਪੂਰੇ ਗੁਰਾਂ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ, ਸਭਨਾਂ ਜੀਆਂ ਕਾ ਇਕ ਦਾਤਾ। ਸੋ ਮੈਂ ਵਿਸਰ ਨ ਜਾਈ॥

ਉਹ ਸੱਚਾ ਨਾਮ, ਅਖੰਡ ਨਾਮ ਤਾਂ ਅਪਣੇ ਆਪ ਹੀ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਨਾ ਕੋਈ ਰੋਕ ਸਕਦਾ ਹੈ ਨਾ ਹੀ ਰੁਕੇਗਾ ਉਹ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਹੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਸਤਿਪੁਰਖ ਜਿਨ ਜਾਨਿਆ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਉ। ਤਿਸ ਕੇ ਸੰਗਿ ਸਿਖ ਉਧਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਓ॥

ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਤਾਂ ਸੱਤ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜਨਾ ਹੈ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਸੱਤਸਵਰੂਪ ਅੰਦਰ ਹੀ ਜਣਾਉਨਾ ਹੈ, ਜਦ ਤੱਕ ਸਰੀਰ ਵਿੱਚ ਜੋਤ ਹੈ ਉਹ ਨਾਮ ਹੈ ਤਦ ਤਕ ਹੀ ਇੰਸਾਨ ਮੈਂ-ਮੈਂ ਕਰਦਾ ਫਿਰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਕੰਮ ਧੰਦੇ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖ ਆਪਣਾ ਆਪ ਗੁਆ ਬੈਠਦਾ ਹੈ ਤੇ ਵਿਸ਼ਿਆਂ-ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਮਨ-ਚਿੱਤ ਦੇ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਮਨ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਿਆਂ-ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕੱਢਣ ਦੇ ਲਈ ਪੂਰੇ ਤੱਤ ਵੇਤਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੀ ਖੋਜ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸੱਤ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਵਿੱਚ ਜਾਕੇ ਹੀ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਕਿਸ ਨੂੰ ਜਾਣਨਾ ਹੈ, ਕਿਸ ਨੂੰ ਮਿਲਣਾ ਹੈ। ਦੁਨਿਆ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਨਾ ਜਾਣ ਕੇ ਬਾਹਰ ਭਟਕਦੀ ਹੈ।

ਦਾਦੂ ਦੁਨਿਆਂ ਬਾਂਵਰੀ, ਮੜ੍ਹੀਆਂ ਪੂਜਣ ਊਤ। ਮਰ ਗਏ ਜੋ ਮੌਤ ਸੇ ਉਨ ਸੇ ਮਾਂਗੇ ਪੂਤ।

ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਸੱਤ-ਸਵਰੂਪ ਤਾਂ ਅੰਦਰ ਹੀ ਹੈ, ਉਹ ਤਾਂ ਘਟ ਘਟ ਵਿੱਚ ਵਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਗੁਰਬਾਨੀ ਕਾਰ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ

ਏਕੋ ਸਿਮਰੋ ਨਾਨਕਾ ਜਲ ਥਲ ਰਹੇਉ ਸਮਾਏ। ਦੂਜਾ ਕਾਹੇ ਸਿਮਰੀਏ ਜੋ ਜਾਮੇ ਤੇ ਮਰ ਜਾਏ॥

ਕਿਉਂਕੀ ਉਹ ਨਾਮ ਵਿੱਚ ਸਮਾਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਪਰ ਮੁਨੱਖ ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਨਾ ਸਮਝਦੇ ਹੋਏ ਬਾਹਰ ਪੜ੍ਹਨ-ਰਟਨ ਤੱਕ ਹੀ ਸੀਮਤ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਉਸਨੂੰ ਕਲਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਆਕੇ ਭੁੱਲ ਬੈਠਾ ਹੈ। ਸੋ ਸਾਨੂੰ ਤਾ ਪੂਰਣ ਤੱਤਵਵੇਤਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਮਿਲ ਗਏ ਹਨ ਅਸੀਂ ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਅਮਰ ਪਦਾਰਥ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਘਟ-ਘਟ ਸੱਚੀ ਜੋਤ ਦਾ ਸ਼ਾਕਸ਼ਾਤ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਸਾਰੇ ਭਰਮ ਸੰਸ਼ੇ ਦੂਰ ਕਰਕੇ ਪੂਰਨ ਗਿਆਨ ਕਰਵਾਇਆ।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੇ ਅਤੀ ਦਯਾ ਕਰਿ ਗਿਆਨ ਦੀਆ ਭਰਪੂਰ। ਭਰਮ ਭਯ ਸੰਸ਼ੇ ਸਭੀ ਹੋ ਗਏ ਚਕਨਾਚੂਰ॥

ਇਹੀ ਪੂਰੇ ਸਤਗੁਰੂ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ ਕਿ ਪੂਰਾ ਸਤਗੁਰੂ ਸਾਕਸ਼ਾਤ ਗਿਆਨ ਕਰਵਾ ਕੇ ਦਿੱਬਯ ਜੋਤ ਦਿਖਾਂਦੇ ਨੇ। ਦਾਸ ਦੀ ਆਪ ਸੱਭ ਅੱਗੇ ਭੀ ਇਹੋ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਕਿ ਸਮਾਂ ਰਹਿੰਦੇ ਪੂਰਣ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦੀ ਸ਼ਰਣੀ ਆਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰੋ ਜੀ।

ਵਿਚਾਰ

ਅਲਫ

ਆਖਣਾ ਕੀ ਜੁਦੋਂ ਸਮਾਂ ਲੰਘ ਜਾਸੀ
ਚਿੜੀ ਚੁਗ ਜਾਏ ਤਾਂ ਪਛਤਾਵਣਾ ਕੀ॥

ਬੇ

ਬੇਧਿਆਨੀ ਵਿੱਚ ਉਮਰ ਜਾਵੇ
ਚਾਹੇ ਸਮਝਣਾ ਨਾ ਤਾਂ ਸਮਝਾਵਣਾ ਕੀ॥

ਪੇ

ਪਰਮ ਪੁਰਖ ਦਾ ਪ੍ਰੇਮ ਚਾਹੇ ਪੈਣਾ
ਆਪਨਾ ਆਪ ਫਿਰੇ ਵਾਰਨਾ ਹੀ॥

Dhammapada

Cont.

Manopubbangama dhamma manosettha manomaya manasa ce padutthena bhasati va karoti va tato nam dukkhamanveti cakkamva vahato padam

Verse 1: All mental phenomena have mind as their forerunner; they have mind as their chief; they are mind-made. If one speaks or acts with an evil mind, '*dukkha*' [3] follows him just as the wheel follows the hoofprint of the ox that draws the cart.

The Story of Thera Cakkhupala

While residing at the Jetavana monastery in Savatthi, the Buddha uttered Verse (1) of this book, with reference to Cakkhupala, a blind thera.

On one occasion, Thera Cakkhupala came to pay homage to the Buddha at the Jetavana monastery. One night, while pacing up and down in meditation, the thera accidentally stepped on some insects. In the morning, some bhikkhus visiting the thera found the dead insects. They thought ill of the thera and reported the matter to the Buddha. The Buddha asked them whether they had seen the thera killing the insects. When they answered in the negative, the Buddha said, *"Just as you had not seen him killing, so also he had not seen those living insects. Besides, as the thera had already attained arahatship he could have no intention of killing and so was quite innocent."* On being asked why Cakkhupala was blind although he was an arahat, the Buddha told the following story:

Cakkhupala was a physician in one of his past existences. Once, he had deliberately made a woman patient blind. That woman had promised him to become his slave, together with her children, if her eyes were completely cured. Fearing that she and her children would have to become slaves, she lied to the physician. She told him that her eyes were getting worse when, in fact, they were perfectly cured. The physician knew she was deceiving him, so in revenge, he gave her another ointment, which made her totally blind. As a result of this evil deed the physician lost his eyesight many times in his later existences.

Manopubbangama dhamma manosettha manomaya manasa ce padutthena bhasati va karoti va tato nam dukkhamanveti cakkamva vahato padam

Verse 2: All mental phenomena have mind as their forerunner; they have mind

as their chief; they are mind-made. If one speaks or acts with a pure mind, happiness (*sukha*) follows him like a shadow that never leaves him..

The Story of Matthakundali

While residing at the Jetavana monastery in Savatthi, the Buddha uttered Verse (2) of this book, with reference to Matthakundali, a young Brahmin. Matthakundali was a young brahmin, whose father, Adinnapubbaka, was very stingy and never gave anything in charity. Even the gold ornaments for his only son were made by himself to save payment for workmanship. When his son fell ill, no physician was consulted, until it was too late. When he realized that his son was dying, he had the youth carried outside on to the verandah, so that people coming to his house would not see his possessions.

On that morning, the Buddha arising early from his deep meditation of compassion saw, in his Net of Knowledge, Matthakundali lying on the verandah. So when entering Savatthi for alms-food with his disciples, the Buddha stood near the door of the brahmin Adinnapubbaka. The Buddha sent forth a ray of light to attract the attention of the youth, who was facing the interior of the house. The youth saw the Buddha; and as he was very weak he could only profess his faith mentally. But that was enough. When he passed away with his heart in devotion to the Buddha he was reborn in the Tavatimsa celestial world. From his celestial abode the young Matthakundali, seeing his father mourning over him at the cemetery, appeared to the old man in the likeness of his old self. He told his father about his rebirth in the Tavatimsa world and also urged him to approach and invite the Buddha to a meal. At the house of Adinnapubbaka the question of whether one could or could not be reborn in a celestial world simply by mentally professing profound faith in the Buddha, without giving in charity or observing the moral precepts, was brought up. So the Buddha willed that Matthakundali should appear in person; Matthakundali soon appeared fully decked with celestial ornaments and told them about his rebirth in the Tavatimsa world. Then only, the audience became convinced that the son of the brahmin Adinnapubbaka by simply devoting his mind to the Buddha had attained much glory.

To be continued.....

नाभिकेन्द्र और हमारा स्वास्थ

ज्ञान का सार है—आचार। धर्म का सार है—शान्ति। जीवन का सार है—स्वस्थ जीवन का आनन्द। अस्वस्थ व्यक्ति का जीवन निराश, कुण्ठा, घुटन से भर जाता है। वह जीता है लेकिन जिन्दगी का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता। समस्या बहुल युग में अस्वास्थय जटिलतम समस्या है। समस्याओं से निजात प्राप्त करने के लिए अनेक उपाय हैं।

योग विज्ञान के अनुसार हमारे शरीर के मुख्य नौ केन्द्र हैं, जिनमें तीन प्रमुख हैं- मस्तिष्क, हृदय और नाभि। शरीर में सभी प्रमुख नाड़ियों का जाल इन तीन स्थानों में एकत्रित होता है। इन तीनों चक्रों में नाभि का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। शरीर में ऊर्जा का संचरण नाभि से होता है।

हमारे जीवन के विकास में संचालन एवं नियन्त्रण में नाभि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जीवन के प्रारम्भ से लेकर अन्तिम क्षणों तक नाभि केन्द्र क्रियाशील रहता है। नाभि में हमारी पैतृक ऊर्जा का संचय होता है जो बीज से वृक्ष की भान्ति हमारे सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गर्भावस्था में नाभि के माध्यम से ही गर्भस्थ शिशु के विकास हेतु आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति होती है।

कहते हैं मृत्यु के समय दिल की धड़कन रूक जाने के बाद भी 5-10 मिन्ट तक नाभि में स्पन्दन होता है। यदि कोई अनुभवी व्यक्ति किसी विधि के द्वारा नाभि की प्राणऊर्जा का सम्पर्क पुनः हृदय से करवा दे तो मृत्यु टल सकती है।

हमारे शरीर में नाभि का महत्वपूर्ण स्थान है। इसको स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है अस्वस्थ नाभि अनेक बीमारियों की जननी है।

नाभि असंतुलन होने के कारणः—

नाभि असंतुलन के संदर्भ में यह कहना मुश्किल है कि नाभि किस कारण से असंतुलित होती है। असंतुलन का कोई कारण नहीं है, अनेक कारण हो सकते हैं परन्तु कुछ ऐसे कारण हैं, जिनका सीधा संबंध नाभि से है।

भयः— जिनके भीतर भय की ग्रंथी ज्यादा होती है उनकी नाभि असंतुलित जल्दी होती है मानव मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले भय का अत्यधिक प्रभाव नाभि पर पड़ता है। उदाहरणतः जंगल में किसी व्यक्ति को शेर या जंगली जानवर मिल गया उसके मस्तिष्क में भय उत्पन्न होगा और नाभि असंतुलित हो जाएगी। व्यक्ति के सामने भी भी कोई भय का कारण उपस्थित होता है उसकी प्रतिक्रिया सर्वप्रथम नाभि केन्द्र को ही झेलनी पड़ती है। शरीर में नाभि और मस्तिष्क का गहरा संबंध है। मानसीक तनाव के कारण भी नाभि असंतुलित हो जाती है।

वजनः— आवश्यकता से अधिक उठाने से या दोनों हाथों से संतुलित वजन नहीं रहने से भी नाभि असुंतलित हो जाती है।

भोजनः—अत्याधिक मसालेदार या गरिष्ठ भोजन करने से भी नाभि असंतुलित हो जाती है। हील की चप्पल पहनने से, अचानक पैर लड़खड़ाने से गिर जाने से एवं कुछ शारीरिक क्रिया, जो हम असावधानी पूर्वक करते हैं, उससे भी नाभि असंतुलित हो सकती है।

अस्वस्थ नाभि के लक्षणः—

नाभि का हमारे पाचन तंत्र के साथ गहरा संबंध होता है। नाभि के असुंतलन से खट्टी डकारें आना, अपच, कब्ज, दस्त आदि शिकायतें हो सकती हैं।

- नाभि के असुंतलन से अचानक वजन घटने या बढ़ने लगता है

क्रमशः.....

श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

''अलख ज्यंति समारोह''

9-10 दिसंबर 2015 को अन्नपूर्णा मंदिर नज़दीक किशनपुरा (शमशान घाट) में मनाया जा रहा है विस्तृत जानकारी अगले अंक में

सत्संग सूचनाएं

1. 20 सितंबर 2015 **प्रार्थी**— सोमपाल जी ।**प्रवचन— स्वामी विशेषानंद जी।**
स्थान—130 मोती बाग नज़दीक लद्देवाली यूनीवर्सिटी जालंधर।**समय**— प्रात: 11:00 से 02:00 तक।

2. 25 सितंबर 2015 **प्रार्थी**— दलबीर सिंह ।**प्रवचन— स्वामी विशेषानंद जी।**
स्थान— गांव व डाक. कुखेड़ तहसील नूरपूर जिला कांगड़ा।**समय**— प्रात: 11:00 से 02:00 तक।

3. 27 सितंबर 2015 **प्रार्थी**—हुक्म सिंह जी ।**प्रवचन— स्वामी विशेषानंद जी।**
स्थान— गांव ठेंठू तहसील बिलावर जिला कठुआ, जम्मू।**समय**— प्रात: 11:00 से 02:00 तक।

4. 02 अक्तूबर 2015 **प्रार्थी**— दर्शन सिंह जी।**प्रवचन— स्वामी विशेषानंद जी।**
स्थान— अन्नपूर्णा माता मन्दिर नज़दीक किश्नपुरा चौंक जालंधर।**समय**— प्रात:11:00 से 02:00 तक।

■□■□